# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल



परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

| परीक्षा का विषय | विषय कोड | परीक्षा का माध्यम |
|---|---|---|
| व्यवसायिक अर्थशास्त्र | 3 3 1 | हिन्दी |

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

माध्यमिक क्रमांक 320 - 2822699

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में - 2 0 6 2 3 2 2 7 2

शब्दों में - दो शून्य छः दो तीन दो दो सात दो

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH

8

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

क :— पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में X शब्दों में X

ख :— परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 29

ग :— परीक्षा का दिनांक 12 06 2020

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्ड्री परीक्षा-2020 केन्द्र क्र. 622002

| पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर | केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर |
|---|---|
| Rajesh Soni M/S Hemsug | |

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठो के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित

पंकज शर्मा

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

नोट :- "हायर सेकेण्डरी परीक्षा में केवल वार्षिक ... प्रायोगिक विषय को छोड़कर ... विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न 100 अंक का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधि... एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जावेंगे।"

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख ...

| प्रश्न क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|
| 1 | |
| 2 | |
| 3 | |
| 4 | |
| 5 | |
| 6 | |
| 7 | |
| 8 | |
| 9 | |
| 10 | |
| 11 | |
| 12 | |
| 13 | |
| 14 | |
| 15 | |
| 16 | |
| 17 | |
| 18 | |
| 19 | |
| 20 | |
| 21 | |
| 22 | |
| 23 | |
| 24 | |
| 25 | |
| 26 | |
| 27 | |
| 28 | |

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 1

1) अर्थव्यवस्था में मुद्रा प्रसार पर

2) घटती है

3) कीमत रेखा

4) इनमें से कोई नहीं

5) दी हुई वस्तु की कीमत गिर जाना

उत्तर क्र. :- 2

1) 5

2) कीमत

3) स्टॉक

4) नाशवान

5) बराबर (समान)

B S E

3

यो

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 3

1) वस्तु की माँग का सम्बंध - माँग के नियम से

2) वस्तु की पूर्ति का सम्बंध - वस्तु की लागत से

रतीय रिजर्व बैंक ने काम प्रारंभ किया - 1935

बैंको का नियमन होता है - बैंकिंग अधिनियम, 1949

5) जनन्क्षेप स्वीकार करता है - व्यापारिक बैंक

उत्तर क्र. :- 4

1) असत्य

2) सत्य

3) सत्य

4) सत्य

5) सत्य

B
S
E

योग पृष्ठ/

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 5

1) वित्त मंत्री

2) विदेशी विनिमय दर

3) भुगतान संतुलन का

4) एक देश की मुद्रा की मात्रा में कमी करना, मुद्रा संकुचन कहलाता है।

5) साम्य मूल्य का निर्धारण

B
S
E

उत्तर क्र. :- 6

बजट रेखा :-

बजट रेखा किसी वस्तु की वह रेखा होती है जो दो वस्तुओं के उन सभी संयोगो को खरीद सकती है जबकि वस्तु की कीमत तथा उपभोक्ता की की आय दी हुई होती है।

उत्तर क्र. :- 8

एकाधिकारी प्रतियोगिता :-

एकाधिकार शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ होता है

प्रश्न क्र.

'अकेला विक्रेता' । अतः किसी फर्म को उस स्थिति एकाधिकारी कहेंगे जब वह वस्तु की एकमात्र पूर्तिकर्ता होती है। उस ~~बा~~ बाजार में एकाधिकारी प्रतियोगिता पाई जाती है। जहाँ मात्र फर्म हो।

उत्तर क्र. :- 9 (अथवा)

सकल घरेलू उत्पाद :-

किसी देश की घरेलू सीमा में ~~उत्पा~~ उत्पादित अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं का मूल्य सकल घरेलू उत्पाद कहलाता है।

उत्तर क्र. :- 10

बजट की विशेषताएँ निम्न हैं :-

(1) बजट का आधार रोकड़ राशि :-

बजट को बहीखाता के आधार पर तैयार न करके रोकड़ राशि के आधार पर तैयार किया जाता है।

) स्वाध्छ बजट अवधि :-

बजट एक निश्चित अवधि सामान्यतः 1 वर्ष के लिए बनाया जाता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र० :- 11

पूरक से आशय :-

पूरक वस्तुएँ वह वस्तुएँ होती हैं जिन्हे दूसरी वस्तु के साथ पूरक के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

उदाहरण :- (1) पेन तथा स्याही
(2) कार तथा पेट्रोल

उत्तर क्र० :- 12 (अथवा)

उपभोक्ता बजट :-

उपभोक्ता का बजट वह बजट होता है जो दो वस्तुओं उन सभी संयोगो को खरीद सकता है जबकि उस वस्तु का व्यय उसकी आगम के बराबर या कम होता है, उपभोक्ता बजट कहलाता है।

B
S
E

उत्तर क्र० :- 13

(1) सीमांत उत्पाद :-

एक अतिरिक्त ईकाई का उत्पादन करने पर कुल उत्पाद में जो वृद्धि होती है उसे सीमांत उत्पाद कहते हैं।

(2) कुल उत्पाद :- वस्तु एक निश्चित मात्रा उत्पादित

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

BSE

करने पर जो कुल उत्पादन प्राप्त होता है वही कुल उत्पाद कहलाता है।

उत्तर क्र. :- 14 (अथवा)

व्यवसायिक बैंकों के प्रमुख कार्य निम्न लिखित हैं:-

(1) जमा प्राप्त करना :-

अर्थव्यवस्था में लोगों से उनकी बचत के रूप में उनकी जमाओं को स्वीकार करना व्यापारिक बैंक का प्रमुख कार्य होता है। इन जमाओं पर व्यापारिक बैंक ब्याज भी देती है।

(2) ऋण प्रदान करना :-

व्यापारिक बैंक अपनी कुल जमाओं का एक निश्चित प्रतिशत अपने पास नकद के रूप में रखकर शेष राशि जरूरतमंदों को ऋण के रूप में दे देती है।

(3) अभिकर्ता सम्बंधी कार्य :-

बैंक ग्राहकों के अभिकर्ता सम्बंधी कार्य भी करती है। जैसे -

(1) ग्राहकों की बीमा किश्त जमा करना।

(2) अंशों एवं प्रतिभूतियों का क्रय - विक्रय करना। आदि

योग पृष्ठ
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 16 (अथवा)

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की प्रमुख विशेषताएँ निम्न लिखित हैं :-

(1) क्रेताओं एवं विक्रेताओं की अधिक संख्या :-

पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार क्रेताओं तथा विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है।

(2) समरूप वस्तुएँ :- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में वस्तु विभेद नहीं पाया जाता बल्कि सभी वस्तुएं एकरूप होती हैं।

(3) फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश :- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में फर्मों का प्रवेश तथा बहिर्गमन स्वतंत्र रूप से होता है।

(4) बाजार का पूर्ण ज्ञान :- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार मे क्रेताओं एवं विक्रेताओं को बाजार की स्थिति का पूर्ण ज्ञान होता है।

(5) काल्पनिक स्थिति :- पूर्ण प्रतियोगिता वास्तविक जगत में नहीं पाई जाती है यह काल्पनिक स्थिति है।

B
S
E

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 18

मुद्रा के कार्य :-

वस्तुओं की कीमत चुकाने तथा अन्य प्रकार के व्यवसायिक दायित्वों को निपटाना ही मुद्रा का कार्य है।
मुद्रा के प्रमुख कार्य निम्न लिखित हैं :-

(1) विनिमय का माध्यम :-

विनिमय का माध्यम मुद्रा का प्राथमिक एवं प्रमुख कार्य है। विनिमय में मुद्रा माध्यम का कार्य करती है। मुद्रा में क्योंकि सर्वग्राहिता का गुण होता है इसलिए कोई व्यक्ति इसे लेने से मना नहीं करता

(2) साख पत्रों का आधार :-

वर्तमान समय में साख पत्रों का प्रयोग सभी देशों में किया जा रहा है। इन साख पत्रों का आधार मुद्रा ही है।

(3) स्थगित भुगतानों का मान :-

यह मुद्रा का महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य से ऋण लेना एवं देना बहुत आसान हो गया है। इसके द्वारा वर्तमान लेन-देनों को भविष्य के लिए मुद्रा के रूप में स्थगित किया जा सकता है।

(4) पूँजी को तरलता प्रदान करना :-

मुद्रा पूँजी को

योग पृष्ठ

प्रश्न क्र.

तरलता प्रदान करता है। मुद्रा के द्वारा पूंजी को एक - प्रयोग से दूसरे प्रयोग में लाया जा सकता है।

उत्तर क्र. :- २२ (अथवा)

माँग की कीमत लोच को प्रभावित करने वाले तत्व :-

(1) वस्तुओं की कीमत :- माँग की कीमत लोच प्रमुख रूप से वस्तुओं की कीमत से प्रभावित होती है। वस्तुओं की कीमत बढ़ने पर माँग कम तथा वस्तुओं की कीमत कम होने पर माँग अधिक हो जाती है।

(२) उपभोक्ता की आय :- माँग की कीमत लोच उपभोक्ता की आय से भी प्रभावित होती है। उपभोक्ता की आय बढ़ने पर माँग भी बढ़ जाती है।

(3) उपभोक्ता की रुचि :- उपभोक्ता

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 22 (अथवा)

मॉग की कीमत लोच को प्रभावित करने वाले तत्व :-

(1) वस्तुओं की प्रकृति :- मॉग की कीमत लोच वस्तुओं की प्रकृति पर निर्भर करती है। अनिवार्य वस्तुओं की मॉग बेलोचदार होती है।

(2) स्थानापन्न वस्तुओं की उपलब्धता :- यदि किसी वस्तु की स्थानापन्न वस्तु उपलब्ध हो तो ऐसी वस्तुओं की मॉग बेलोचदार होती है।

(3) वस्तु के विभिन्न प्रयोग :- यदि वस्तु ऐसी है जिसे विभिन्न प्रयोगो मे लाया जा सकता है जैसे - बिजली। तो इन वस्तुओं की लोच बेलोचदार होगी।

(4) वस्तुओं का प्रयोग स्थगित होना :- यदि वस्तु ऐसी होती है जिसके प्रयोग को भविष्य के लिए स्थगित किया जा सके तो ऐसी वस्तुओं की मॉग की कीमत लोच बेलोचदार होगी।

(5) वस्तु पर व्यय किया गया आय का भाग :-

प्रश्न क्र.

वस्तु पर व्यय किया गया आय का भाग भी वस्तु की कीमत लोच को प्रभावित करेगा।

उत्तर क्र. :- 23 (अथवा)

औसत लागत वक्र :- औसत लागत वक्र अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर 'U' की तरह दिखता है। औसत लागत वक्र की U आकृति होने का प्रमुख कारण फर्म को प्राप्त होने वाली आंतरिक बचतें हैं। जिनको निम्न लिखित श्रेणियों में बाँटा जा सकता है -

(1) श्रम सम्बंधी बचतें :- ये बचते श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण का परिणाम होती हैं। उत्पादन की मात्रा के स्तर को बढ़ाने पर श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण भी उतना ही सम्भव हो जाता है। फलस्वरूप श्रमिकों की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है तथा प्रति ईकाई लागत कम हो जाती है।

(2) तकनीकी बचतें :- उत्पादन की तकनीक में

सुधार होने पर फर्म को तकनीकी बचतें प्राप्त होती हैं तथा जिनसे उत्पादन की प्रति ईकाई लागत कम हो जाती है।

(3) विपणन बचतें :-

उत्पादन की मात्रा बढ़ने पर फर्म को विक्रय लागतों जैसे - विज्ञापन एवं प्रचार - प्रसार आदि में व्यय अधिक करने की आवश्यकता नहीं होती इससे फर्म ~~के~~ ~~प्रबंधकीय~~ ~~बच~~ ~~बि~~ के उत्पादन की प्रति ईकाई लागत ~~बे~~ में ~~क~~ कमी हो जाती है।

B
S
E

(4) प्रबंधकीय बचतें :-

उत्पादन को दो गुना करने पर फर्म को प्रबंध पर दो - गुना व्यय नहीं करना ~~प~~ पड़ता जिससे फर्म की प्रति ईकाई लागत में कमी आ जाती है तथा फर्म को प्रबंधकीय बचतें प्राप्त होती हैं।

उपर्युक्त कारणों से प्रारंभ में लागत वक्र गिरते हैं। उत्पादन की मात्रा में वृद्धि हेतु जब फर्म परिवर्तनशील साधनों की मात्रा में वृद्धि करती है तब उत्पादन का स्तर अनुकूलतम हो जाता है तथा साधनों का आदर्श संयोग स्थापित हो जाता है। यदि फर्म उत्पादन की मात्रा में और अधिक वृद्धि ~~करती~~ ~~है~~ ~~है~~ ~~के~~ हेतु परिवर्तनशील साधनों को बढ़ाती है तो यह

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

आदर्श संयोग भंग हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि प्रारंभ में लागत वक्र गिरते हैं फिर एक बिंदु पर स्थिर होकर बढ़ते हैं जिससे वह U आकृति के हो जाते हैं।

उत्तर क्र. :- 25 (अथवा)

राष्ट्रीय आय में धीमी वृद्धि के कारण :-

(1) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि :-

राष्ट्रीय आय में धीमी गति से वृद्धि होने का प्रमुख कारण जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होना है। ~~इससे~~ इस प्रतिव्यक्ति आय कम होती है तथा राष्ट्रीय आय भी कम होती है।

(2) भाग्यवादिता तथा निरक्षरता :-

हमारे देश के नागरिकों में अज्ञानता तथा निरक्षरता अधिक है जिसके कारण भाग्यवादिता, निराशावादि रुढ़िवादिता की भावना अधिक है जिसके कारण राष्ट्रीय आय में मंद गति से वृद्धि होती है।

(3) आय की विषमता :-

हमारे देश में, अन्य देशों की तुलना में ~~अब~~ आय की विषमता बहुत अधिक है जिसके ~~अब~~

B
S
E

योग पूप पृष्ठ

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

प्रश्न क्र.

कारण राष्ट्रीय आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि नहीं हो पाती है।

(4) ब्रिटिश शासन :-

हमारे देश पर ब्रिटिश शासन ने अपनी सत्ता जमा रखी थी। ~~जिसके~~ जिसके फलस्वरूप आर्थिक विकास अवरुद्ध - सा हो गया तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि नहीं हो पा रही है।

B
S
E

(5) देश का विभाजन :-

सन् 1947 में भारत की स्वतंत्रता के साथ भारत - पाकिस्तान विभाजन भी हो गया जिससे देश का अधिकांश उपजाऊ क्षेत्र पाकिस्तान में चला गया तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि धीमी गति से हो रही है।

(6) विदेशी आक्रमण :-

भारत ~~में~~ पर कई देशों ने आक्रमण किया ~~तथा~~ जिससे राष्ट्रीय ~~आम~~ आय में वृद्धि नहीं हो सकी।

उत्तर क्र. : 26 (अथवा)

मुद्रा के प्रमुख दोष ~~विम्नलिखित~~ निम्नलिखित हैं -

(1) व्यापार चक्र :-

मुद्रा के कारण अर्थव्यवस्था में

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

व्यापार चक्र उत्पन्न होते रहते है अर्थ आर्थिक मंदी एवं स्फीति की स्थिति आती रहती है।

(2) अति पूँजीकरण :-

मुद्रा के वजह से व्यवसाय में अतिपूँजीकरण की समस्या उत्पन्न हो जाती है। क्योंकि मुद्रा ने ऋण लेने की सुविधा प्रदान की है।

(3) पूँजीवाद के दोष :-

मुद्रा के कारण अर्थव्यवस्था में पूँजीवाद के दोष उत्पन्न हो जाते हैं जिसका अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(4) ऋणग्रस्तता में वृद्धि :-

मुद्रा के कारण ऋण लेना आसान हो गया है। जिसके कारण गरीब देशों ने भी ऋण लेकर समृद्ध होने की प्रवृत्ति को अपना लिया है।

(5) आर्थिक असमानताएँ :-

वर्तमान जगत में व्याप्त असमानताएँ मुद्रा की ही देन हैं। मुद्रा की वजह से धनी व्यक्ति और अधिक धनी तथा गरीब व्यक्ति और अधिक गरीब हो जाता है।

B
S
E

उत्तर क्र. :- 19

**सीमांत उपभोग प्रवृत्ति :-**

सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कुल आय में वृद्धि तथा कुल उपभोग में वृद्धि के मध्य सम्बंध स्थापित करती है। इसे निम्न सूत्र द्वारा ~~व्य~~ व्यक्त किया जाता है।

$$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$$

**सीमांत बचत प्रवृत्ति :-**

सीमांत बचत प्रवृत्ति आय में ~~कुल~~ वृद्धि तथा कुल बचत में वृद्धि के अनुपात को बताती है। ~~इसमें~~ इसे निम्न सूत्र द्वारा व्यक्त किया जाता है —

$$MPS = \frac{\Delta S}{\Delta Y}$$

सीमांत उपभोग ~~क्ष~~ प्रवृत्ति तथा ~~ब~~ सीमांत बचत प्रवृत्ति दोनो अलग - अलग हैं तथा दोनो अप्रत्यक्ष रूप से एक - दूसरे के साथ सम्बंधित हैं।

P.T.O.

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 20

| राजस्व व्यय | पूँजीगत व्यय |
|---|---|
| 1) राजस्व व्यय से सरकार को आय प्रांप्त नहीं होती है। | 1) पूँजीगत व्यय से सरकार को आ- प्राप्त होती है। |
| 2) राजस्व व्यय अधिक मात्रा में नहीं किये जा सकते। | 2) पूँजीगत व्यय अधि- मात्रा में किये जा सकते हैं। |
| 3) राजस्व व्यय में निर्माण कार्य नहीं किया जाता है। | 3) पूँजीगत व्यय में निर्माण कार्य सरकार द्वारा किया जाता है। |
| 4) राजस्व व्यय में सरकार की निजी सम्पत्ति का निर्माण होता है। | 4) पूँजीगत व्यय में सडक, पुल, भवन का निर्माण होता है। |

B
S
E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 17 (अथवा)

किसी देश के कल्याण के निर्देशाँक के रूप में सकल घरेलू उत्पाद की प्रमुख सीमाएँ निम्न हैं

(1) निर्धनों को प्राप्त होने वाली आय :-

यदि किसी देश के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होती है तथा निर्धनों को प्राप्त होने वाली आय कम होती है तो देश के कल्याण का निर्देशांक कम होगा।

(2) रुचियों में परिवर्तन :-

यदि सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होती है तथा लोगों की रुचि में परिवर्तन बुराई की तरफ होता है तो कल्याण का निर्देशांक कम होगा।

(3) प्राकृतिक संसाधन :-

यदि सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होती है ~~तो~~ और प्राकृतिक संसाधनों का अमितव्ययीपूर्णता से प्रयोग किया जाता तो उससे कल्याण कम होगा।

(4) श्रम के घण्टों में वृद्धि :-

यदि काम के घण्टों में वृद्धि होती है तथा सकल घरेलू उत्पाद में भी वृद्धि होती है तो कल्याण का निर्देशांक कम होगा।

समाप्त

B
S
E

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 15

आदर्श आर्थिक विश्लेषण :-

आदर्श आर्थिक विश्लेषण, ~~क्षे के क~~ आर्थिक विश्लेषण की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत हम अध्ययन करते हैं कि कौनसी ~~क्रियाविधी~~ क्रियाविधि हमारे अनूकुल हैं तथा कौनसी प्रतिकूल।

B S E

उत्तर क्र. :- 7

जब किसी वस्तु की कीमत में कमी होती है तो उस वस्तु की माँग में वृद्धि हो जाती है तब हम यह कह सकते हैं कि बाजार में अधिमाँग है।

उत्तर क्र. :- 25

संतुलन से अभिप्राय प्रायः परिवर्तन न होने की स्थिति से होता है। अतः एक बाजार में जब परिवर्तन होने की प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है तब बाजार संतुलन कहलाता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 21

जब कुछ देश अपने बाह्य खातों में स्थिरता लाना चाहते हैं तो वह स्थिर विनिमय दर को प्रयोग में लाएँगे।
स्थिर विनिमय दर को प्रयोग में लाने के कारण –

(1) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन :-
स्थिर विनिमय दर के अन्तर्गत आयातकर्ता तथा निर्यातकर्ता को यह भय नहीं रहता कि उन्हें हानि होगी। अतः अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का पूर्ण विकास होता है।

(2) पूँजी निर्माण :-
स्थिर विनिमय दर की वजह से देश में पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन मिलता है।

(3) विदेशी पूँजी को प्रोत्साहन :-
विनिमय दर में स्थिरता होने के कारण देश में विदेशी पूँजी का अन्तर्प्रवाह आसानी से हो जाता है।

(4) विनिमय नियंत्रण :-
स्थिर विनिमय दर होने से विनिमय नियंत्रण करने में सरकार को परेशानी नहीं होती।

समाप्त